IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

अनिल रिसाल सिंह की छायांकन यात्राः कलात्मक छायाचित्रों के संदर्भ में

डॉ0 सुनीता गुप्ता

शोध निर्देशिका, एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्षा
चित्रकला विभाग
धर्म समाज महाविद्यालय, अलीगढ़

हरिकेश यादव

शोधार्थी (ड्राइंग एण्ड पेंटिंग)
धर्म समाज महाविद्यालय, अलीगढ़
डॉ0 भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा (उ0प्र0), भारत

सारांश

अनिल रिसाल सिंह लखनऊ उत्तर प्रदेश के एक वरिष्ठ भारतीय छायाकार हैं। उनकी छायांकन यात्रा उस समय आरंभ हुई, जब उन्हें अपने पिता के द्वारा एक 'एग्फा आइसोली' कैमरा उपहार स्वरूप प्राप्त हुआ। किन्तु उनकी यात्रा का बेहतरीन दौर तब शुरु हुआ, जब वह लखनऊ क्रिश्चियन कॉलेज से बी.एस.सी. की पढाई कर रहे थे। वहाँ पर उन्होंने सहपाठियों के साथ मिलकर फोटोग्राफी क्लब शुरू किया। अनिल ने कई तरह के छायांकन को अपना विषय बनाया। शुरुआत में काफी लंबे समय तक श्वेत–श्याम भू–दृश्य खींचे। वह भू–दृश्य (लैंडस्केप), नेचर, स्ट्रीट, वाइल्ड लाइफ, पोर्ट्रेट हर तरह के छायांकन किया करते थे। सबसे अधिक आनंद उन्हें भू–दृश्य छायांकन और पहाड़ी दृश्य छायांकन में आता था। किन्तु समय के साथ–साथ उनके कार्य मे बदलाव आया और उसके बाद लगभग 14–15 वर्षों से 'रंग और आकार' पर कार्य करना आरंभ किया है। इस समय उन्होंने छायाचित्रों में संयोजन के विशेष महत्व को दर्शाया है तथा अपने संयोजन के साधारण विषयों को एक ज्यामितीय आकार दिया है। आकृतियों के साथ उनमें रंगों का भी प्रयोग दिखाई पड़ता है। अनिल का जन्म सन् 1954 ई. में आगरा में हुआ था और बाद में अपने परिवार के साथ लखनऊ में रहने लगे। 1967 से ही लखनऊ उनका निवास स्थान रहा है। अनिल रिसाल सिंह फेडरेशन ऑफ इंडियन फोटोग्राफी के पूर्व अध्यक्ष, लखनऊ कैमरा क्लब के अध्यक्ष व आजीवन सदस्य के रूप में भी हैं। उनकी तस्वीरें देश व विदेश में व्यक्तिगत व संस्थागत रूप में बड़ी संख्या में एकत्रित की गई हैं। छायांकन के लिए उन्हें देश विदेश से करीब 250 पुरष्कारों से नवाजा गया है। उनके द्वारा खींचे गए कलात्मक छायाचित्र दर्शकों और जनमानस को स्वतः अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं। अनिल के छायाचित्रों में पहाड़ी दृश्यों से लेकर रंगों और आकारों के साथ–साथ देश की ऐतिहासिक धरोहरें भी देखने को मिलती हैं। वर्तमान में मोबाइल छायांकन भी करना शुरू कर दिया है।

मुख्य शब्दः रंग, आकार, भू–दृश्य छायांकन, कलात्मक छायाचित्र, मोबाइल छायांकन, लखनऊ व कैमरा क्लब।

अनिल रिसाल से बातचीत

- **छायांकन की प्रेरणा कब और कहाँ से मिली?**

छायांकन का शौक मुझे बचपन से था, जब मैं करीब 5–6 वर्ष का था। मेरे पिता भी छायांकन किया करते थे, वह एक शौकिया छायाकार भी थे। बचपन में जब भी मैं उन्हें कैमरा इस्तेमाल करते देखता था तब मैं बहुत ही कोतुहल सा अनुभव करता था। उस छोटी सी उम्र में मुझे नहीं पता था कि इसे कैमरा कहते हैं। बाद में मुझे मालूम हुआ कि इसे कैमरा कहते हैं। छायांकन मुझे अपने पिता से विरासत में मिला या दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि छायांकन मेरे खून में था। बहुत छोटी उम्र से ही मेरा छायांकन के प्रति लगाव था।

- **आपकी छायांकन यात्रा की शुरुआत वास्तविक रूप से कब हुई?**

एक दिन कुछ ऐसा हुआ कि 1964 ई. में मेरे पिता को किसी ट्रेनिंग से संबंधित काम के लिए अमेरिका जाना हुआ। तब उन्होंने मुझसे पूछा कि अनिल तुम्हारे लिए वहाँ से क्या लाऊं ? जैसा कि हर माता–पिता जब कभी बाहर जाते हैं तो अपने बच्चों से पूछते हैं, मेरे मुँह से स्वतः निकल गया कैमरा। मेरे पिता एक वर्ष बाद जब अमेरिका से वापस लौटे, मेरे लिए वहाँ से कैमरा तो नहीं ला सके। किन्तु यहाँ भारत में कुछ ही समय बाद मेरे लिए 'एग्फा आइसोली' कैमरा खरीदा और मुझे उपहार स्वरूप भेंट किया। इसलिए कह सकते हैं कि वहाँ से मेरी छायांकन यात्रा की शुरुआत वास्तविक रूप से हुई। जब मेरे हाथ में कैमरा आया तो मैंने स्वयं से छायांकन करना शुरू कर दिया। यह कुछ मोड़ थे जो मेरी छायांकन यात्रा की शुरुआत में बहुत ही अहम थे।

- **आप छायांकन क्यों करते हैं? छायांकन को लेकर आपके प्रति आपके पिता के क्या विचार थे?**

मैं छायांकन इसलिए करता हूँ क्योंकि मुझे छायांकन करना पसंद है। जब मेरे पिता को छायांकन के संबंध में यह दिखा और उन्हें मालूम भी हुआ कि मेरी छायांकन में अधिक रुचि है तो वह मुझसे हमेशा कहा करते थे कि अनिल पहले पढ़ाई कर लो फिर छायांकन करना या जो भी करना चाहो बाद में कर सकते हो, पढ़ाई पहले है। उनकी यह बात बिल्कुल सत्य थी क्योंकि छायांकन एक बहुत ही ध्यान देने वाला शौक है। पिता से मुझे छायांकन के बारे में बहुत अधिक जानकारी तो नहीं मिली, क्योंकि उनका कहना था कि अगर मैं छायांकन में अपनी रूचि अधिक बढ़ाऊंगा तो मेरी जो पढ़ाई है वह अपेक्षित होगी।

- **लखनऊ क्रिश्चियन कॉलेज में 'फोटोग्राफी क्लब' की शुरुआत कब और कैसे हुई?**

मैं जब लखनऊ क्रिश्चियन कॉलेज में बी.एस.सी. प्रथम वर्ष का छात्र था, दुर्भाग्यवश उसी समय मेरे पिता का देहांत हो गया। मेरे पिता को छायांकन के साथ–साथ कैमरा उपकरण जमा करने का भी शौक था, वह करीब 6–7 कैमरे इस्तेमाल करते थें। उनके बाद मैं उन कैमरों का इस्तेमाल करने लगा और लखनऊ क्रिश्चियन कॉलेज में अपने अध्ययन कार्य के समय ही सहपाठियों के साथ मिलकर वहाँ फोटोग्राफी क्लब शुरू किया। 20–25 साल पहले भी वहाँ पर फोटोग्राफी क्लब हुआ करता था, किन्तु किसी कारणवश बंद हो गया था। वहाँ पर एक एप्लाइड साइंस एसोसिएशन भी था, जिसके स्टाफ एडवाइजर हमारे केमिस्ट्री के गुरु डॉ. ई. डब्ल्यू बावर थे। वह एक अमेरिकन थे। उनकी अगुवाई में एप्लाइड साइंस एसोसिएशन एक ग्रुप था जो बहुत से कार्यक्रम कराता था। उसी ग्रुप के अंतर्गत छायांकन भी एक रूप में आया और हम लोगों ने जानकारी देने की क्रिया प्रतिक्रिया को दोबारा से शुरू किया। एक 'फोटोग्राफी क्लब' एप्लाइड साइंस एसोसिएशन के अंतर्गत बनाया गया। डॉ. बावर ने हम लोगों को केमिस्ट्री विभाग में एक कमरा दिया तथा पुराना उपकरण एन्लार्जर भी दिया। कुछ चीजें हमें खरीदनी पड़ी जैसे, शेफ–लाइट इत्यादि जो टूट गई थी। इस तरह डार्क रूम की सुविधा हम लोगों ने उस क्लब के अंदर शुरू की। छायांकन में रुचि रखने वाले विद्यार्थियों को प्राथमिक चीजों के बारे में बताया गया। वहाँ ऐसी व्यवस्था की गई कि फोटोग्राफी क्लब के सदस्य किसी भी समय डार्क–रूम का उपयोग कर सकते थे। वे बारी–बारी से डार्क–रूम का प्रयोग करते थे और वहाँ पर उन्हें सारी सुविधा दी जाती थी। केवल छात्र को अपना छायांकन कागज (फोटोग्राफी पेपर) लाना होता था। प्रिंट तैयार करने से पहले उन्हें समझाया जाता था कि कैसे वे अपने नेगेटिव से प्रिंट तैयार करें। इस तरह छात्र डार्क–रूम का प्रयोग करके अपना प्रिंट यानी छायाचित्र भी स्वयं बनाते थे। डार्क रूम की यह सुविधा सभी को काफी पसंद आई और बहुत चर्चित भी हुई।

- **इस 'फोटोग्राफी क्लब' से आप के छायांकन को निखारने में किस प्रकार प्रोत्साहन मिला?**

फोटोग्राफी क्लब स्थापित होने के कुछ ही समय बाद सभी ने मिलकर यूपी राज्य स्तरीय छात्र छायांकन प्रतियोगिता का आयोजन भी किया। मैं वहाँ बी.एस.सी. की पढ़ाई तक रहा और दो छायांकन प्रतियोगिता पार्ट–1 व पार्ट–2 किया। चिट्ठियाँ लिखकर ऐसी संस्था को सूचना देते थे क्योंकि उस समय इंटरनेट का जमाना नहीं था। इस प्रकार देश के कई संस्थाओं, महाविद्यालयों से विद्यार्थी अपना छायाचित्र भेजते थे और हम लोग उसे प्रदर्शित भी करते थे। एक निर्णायक मण्डल भी था, जिसमें लखनऊ कला महाविद्यालय के प्रो. पी.सी. लिटिल और प्रो. जयकृष्ण अग्रवाल थे। इसमें विद्यार्थियों को पुरष्कार भी दिया जाता था, अच्छी ट्रॉफी या मेडल बनाकर उन्हें भेजा जाता था। जिनको पुरष्कार मिलता था उनको सर्टिफिकेट ऑफ पार्टिसिपेशन्स भी भेजा जाता था। मेरा दो साल का यह पड़ाव जो लखनऊ क्रिश्चियन कॉलेज में रहा एवं फोटोग्राफी क्लब स्थापित किया। उससे मेरे छायांकन को बहुत अधिक प्रोत्साहन मिला। कॉलेज की वार्षिक पत्रिका या ब्रोशर्स में कॉलेज बिल्डिंग, कॉलेज कार्यक्रम, मेरे द्वारा खोजे गए छायाचित्र प्रदर्शित किए गए। यह भी एक उत्साह–वर्धक चीज रही। इन सभी से मेरे छायांकन को निखारने में काफी मदद मिली।

- **यू.पी. एमेच्योर फोटोग्राफी एसोसिएशन के विषय में आपके क्या विचार हैं?**

यू.पी. एमेच्योर फोटोग्राफी एसोसिएशन एक बहुत पुरानी संस्था थी, उसका मैं सदस्य रहा। वहाँ पर वरिष्ठ व कनिष्ठ छायाकार सदस्य थे। यू.पी. एमेच्योर फोटोग्राफी संस्था ने कुछ इंटरनेशनल सैलून भी किए, जिसकी प्रदर्शनियाँ लखनऊ में होती थी। इन प्रदर्शनियों में लगे छायाचित्रों को देखकर, मैं बहुत प्रभावित हुआ और मुझे सीखने का बहुत बड़ा अवसर भी प्राप्त हुआ। अतः उस समय जो अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनियाँ हुई, उसमें देश–विदेश के बहुत से छायाकार आते थे। उनके छायाचित्रों को देखकर मैंने बहुत कुछ सीखा।

- **लखनऊ कैमरा क्लब का गठन कब और क्यों किया गया तथा इसके संस्थापक सदस्यों में किन–किन लोगों का नाम है?**

कला के क्षेत्र में लखनऊ का स्थान हमेशा से काफी ऊँचा रहा है और यू.पी. एमेच्योर फोटोग्राफी एसोसिएशन एक बहुत ही पुरानी संस्था थी, जो दुर्भाग्यवश बंद हो गई। छायांकन में लखनऊ का योगदान बहुत ही पहले से था। इसलिए लोगों ने सोचा कि यहाँ पर फिर से एक कैमरा बॉडी बनानी चाहिए। तत्पश्चात 1979 में लखनऊ कैमरा क्लब का गठन किया गया। लखनऊ कैमरा क्लब के गठन में प्रमुख रुप से कुँवर सुखदेव सिंह, एच.एस. कोहली एवं कृष्ण कुमार थे और मैं भी उसके संस्थापक सदस्यों में से एक था। लखनऊ कैमरा क्लब अभी भी अस्तित्व में है और मैं वर्तमान में इसका अध्यक्ष हूँ। वर्षों से यहाँ प्रत्येक वर्ष वर्कशॉप, सेमिनार, व्याख्यान, प्रदर्शनियाँ एवं स्लाइड शो आदि का आयोजन किया जाता है। जिसमें विज्ञान और छायांकन की, कला की बारीकियों को समझने में मदद मिलती है।

- **कुँवर सुखदेव सिंह के संपर्क में आने से आपके छायांकन यात्रा पर क्या प्रभाव पड़ा?**

कुँवर सुखदेव सिंह के संपर्क में आने से मैंने छायांकन को गहराई से सीखा। बहुत बार आपको कुछ बोल कर या निर्देश देकर नहीं बताया जाता, लेकिन उस व्यक्ति के साथ रहने से आप स्वतः बहुत कुछ सीख जाते हैं। हमारे देश में प्राचीन काल में जो गुरुकुल हुआ करते थे अथवा हमारे देश की गुरु शिष्य परंपरा है, इसका सीखने–सीखाने में बहुत बड़ा योगदान था। इस प्रकार कुँवर सुखदेव सिंह के संपर्क में आने, उनके साथ रहने, साथ में छायांकन करने और छायांकन ट्रिप पर जाने से, मैंने बहुत कुछ स्वयं सीख लिया। जैसा कि कुँवर सुखदेव सिंह भू–दृश्य (लैंडस्केप) छायाकार थे, इसलिए मुझे भी भू–दृश्य छायांकन (छायाचित्र–1) में रूचि हुई। करीब 40–42 साल तक भू–दृश्य छायांकन किया। मेरे भू–दृश्य के छायाचित्र श्वेत–श्याम होते थे।

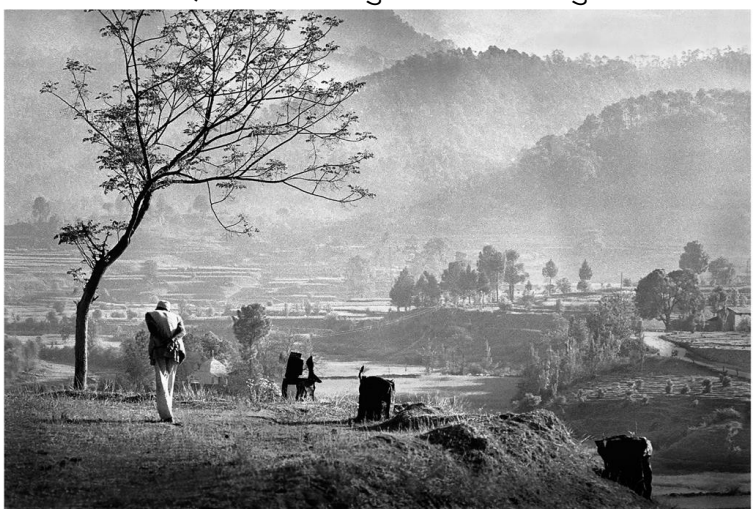

(छायाचित्र–1)

- **कलाकार जयकृष्ण अग्रवाल और पी.सी. लिटिल से आप कब संपर्क में आए और क्या मार्गदर्शन प्राप्त हुआ?**

मैं उस समय प्रो. जयकृष्ण अग्रवाल के संपर्क में आया, जब वह यू.पी. एमेच्योर फोटोग्राफी एसोसिएशन के सदस्य थे। जयकृष्ण अग्रवाल उस समय लखनऊ कला महाविद्यालय के प्रवक्ता थे। उनके संपर्क में आने से छायांकन व सौंदर्य से संबंधित बहुत सी जानकारी मुझे प्राप्त हुई और मैं आज भी उनके संपर्क में रहता हूँ, अपना कार्य दिखाता हूँ तथा उनकी प्रतिक्रिया जानना चाहता हूँ। लखनऊ कला महाविद्यालय में ही प्रो. पी.सी. लिटिल थे, मैं उनके संपर्क में भी रहता था और उनको भी अपना छायाचित्र दिखाता था तथा उनकी जो टिप्पणी होती थी, उसे जानने की कोशिश करता था। अतः प्रो. पी.सी. लिटिल के साथ बातचीत से मुझे छायांकन से संबंधित जानकारी व मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

- **40–42 वर्ष तक आपने भू–दृश्य छायांकन किए, किंतु बाद में 'रंग और आकार' पर छायांकन करने लगे। आखिरकार ऐसी इच्छा आपके मन में कब और क्यों जागृत हुई?**

40 से 42 वर्ष तक श्वेत–श्याम भू–दृश्य छायांकन इसलिए किया क्योंकि उस समय तक मुझे वही अच्छा लगता था, उसे करने से मुझे अपार खुशी व प्रसन्नता का अनुभव होता था। लेकिन इतने लंबे समय तक भू–दृश्य छायांकन करने के बाद मैंने अपने अंदर कुछ बदलाव महसूस किया और ऐसा भी नहीं कि यह बदलाव अचानक से हो गया, यह बदलाव बहुत ही क्रमिक था। श्वेत–श्याम छायांकन का जो आखिरी समय था, उसी समय से ही मेरे देखने, सोचने व समझने और काम करने में वह बदलाव आरंभ हो चुका था, जिसे उस समय मैं नहीं समझ पाया था। फिर मैंने अपने आप से प्रश्न किया कि एक अच्छा भू–दृश्य मेरे सामने है और बहुत खूबसूरत भी है, यदि उसका एक बहुत खूबसूरत छायाचित्र या फोटोग्राफिक तस्वीर बनाया तो क्या कार्य किया, जो पहले से खूबसूरत है। उसे कुछ छायाचित्र प्रक्रिया से और कुछ छायांकन तकनीक से, उसे थोड़ा और सुंदर कर दिया जाए, लेकिन वह पहले से सुंदर है। उसके बाद मुझे लगा कि मैंने कोई विशेष कार्य नहीं किया और उस समय से मेरे अंदर की इच्छा जाग्रत हुई कि मैं ऐसी वस्तुओं का छायांकन करूंगा। जो बहुत ही साधारण होती हैं। जिनको प्रायः हम देखते हुए भी नहीं देखते हैं या नकारते हैं। मैंने अपने अंदर ऐसी चेतना महसूस की कि मैं ऐसी वस्तुओं का छायांकन करूं जो अति साधारण (छायाचित्र–2) हैं और उनका एक असाधारण छायाचित्र मैं प्राप्त कर सकूं। इस प्रकार मेरी छायांकन यात्रा में एक बदलाव आया।

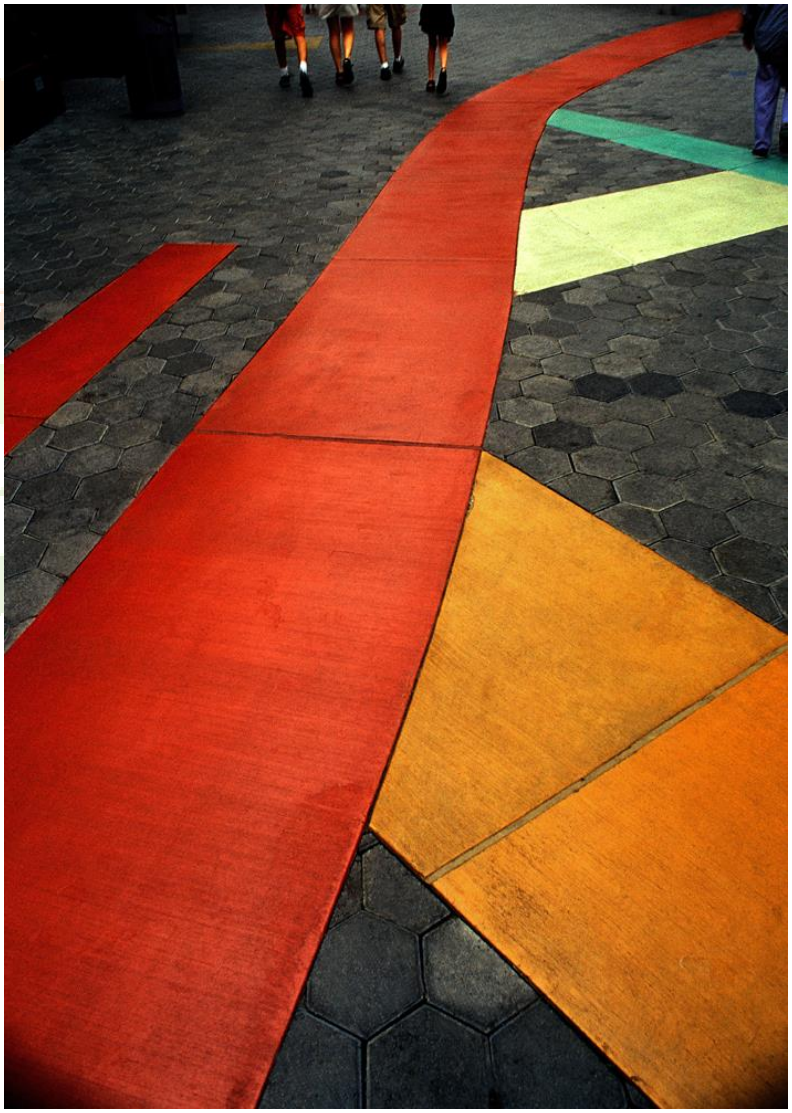

छायाचित्र–2

एक ही तरह का काम हम लगातार करते रहे तो उसमें एक बासीपन आ जाता है। इस तरह से बहुत लंबे समय तक एक ही तरह का छायांकन करने के बाद एक नई चीज जो मैंने शुरू की वह चीज थी साधारण वस्तुओं का छायांकन। इसमें विशेषतः मेरी विषय वस्तु 'रंग और आकार' थी।

- **नई थीम (विषय वस्तु) 'रंग और आकार' पर काम करते समय आपके मन में किस तरह के ख्याल आते थे और इस यात्रा में आप को किन–किन गुरुजनों का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ?**

जब हम एक नई चीज की शुरुआत करते हैं तो अपने अंदर एक डर होता है कि यह जो अब हम कर रहे हैं, हम सही रास्ते पर जा रहे हैं कि नहीं जा रहे हैं। एक असमंजस की स्थिति होती है और ऐसी असमंजस की स्थिति मेरे मन में भी थी, जिसको मैंने महसूस किया। ऐसे समय में मुझे उस क्षेत्र में ज्यादा योग्यता व अनुभव रखने वाले प्रो. जयकृष्ण अग्रवाल और प्रो. पी.सी. लिटिल जैसे महान विभूतियों के संपर्क में आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ तथा एक और बहुत प्रसिद्ध छायाकार श्री बेनू सेन जो कोलकाता के थे, वह अब इस दुनिया में नहीं हैं, उनको मैंने अपने प्रयोग (एक्सपेरिमेंटेशन) के बारे में बताया और अपना छायाचित्र दिखाया। इन सभी लोगों से मुझको मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। जिनसे मेरा साहस बढ़ता गया कि इस विषय वस्तु 'रंग और आकार' पर और काम करूं, जिसमें संभावनाएं असीमित हैं। मैं इन सभी गुरुजनों को प्रणाम करता हूँ और उनसे जो मार्गदर्शन मिला उसके लिए मैं आजीवन आभारी रहूँगा।

- **छायाचित्रों में विशेष कर 'रंग और आकार' में क्या दिखाने का प्रयास किया है?**

'रंग और आकार' के परस्पर मिश्रण से एक बहुत असीमित संभावनाएं मेरे सामने नजर आई। अगर इसे विभाजित करना चाहूँ तो वे 'रंग और आकार' जो प्रकृति में पाए जाते हैं और वे रंग और आकार (छायाचित्र–3) जो उन वस्तुओं में पाए जाते हैं जिसे मनुष्य द्वारा बनाया गया है। इसमें विशेषतः जो कंकरीट ढांचा (स्ट्रक्चर्स) थे, उनका मैंने बहुत छायांकन किया है तथा ग्राफिक्स व ज्यामिति आकार में, विभिन्न रंग में, मेरी रूचि का क्षेत्र आज से करीब 15 वर्ष पहले शुरू हुआ और लगातार जारी है। 'रंग और आकार' साधारण वस्तुएं हैं, जिसको हम सभी देखते हुए भी नहीं देखते। असाधारण छायाचित्र को प्राप्त करने की जो मेरी कोशिश है, वह बहुत ही आनंद व संतुष्टि से परिपूर्ण है। मुझे जो संतुष्टि और आनंद वर्षों पहले भू–दृश्य छायांकन में मिलता था, वही संतुष्टि और आनंद आज मुझे 'रंग व आकार' जो मेरी विषय वस्तु है उसके अध्ययन में प्राप्त होता है।

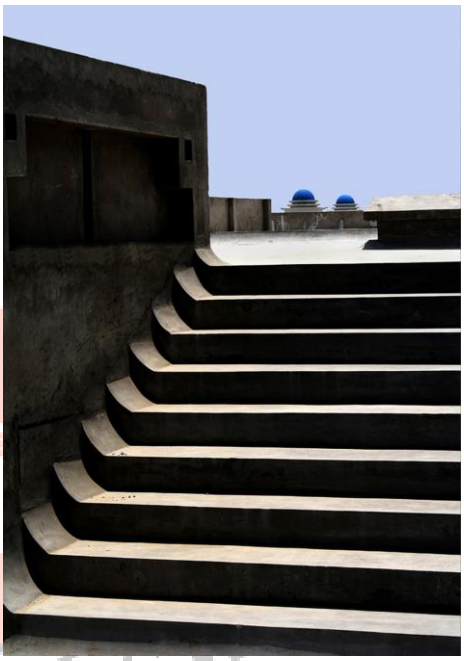

(छायाचित्र–3)

- **कलात्मक छायांकन पर आपके क्या विचार हैं?**

जब हम कला और सौंदर्य की बात करते हैं तो कुछ नया करने का विचार होता है। वह हमारे दिल मे हमेशा होना चाहिए। तभी हम कला के क्षेत्र में आगे कदम बढ़ा सकते हैं। अगर पुरानी पद्धति पर हम काम करते रहेंगे तो मेरा मानना है कि फिर अधिक उन्नति उसमें नहीं हो सकती है। यदि हम कलात्मक छायांकन को परिभाषित करना चाहें तो इस प्रकार से कर सकते हैं, ''जब हम एक नई चीज को नए रूप में प्रस्तुत करते हैं तब उसे हम कलात्मक छायांकन (छायाचित्र–4) कह सकते हैं या एक ऐसा छायाचित्र जिसमें हमारा अपना व्यक्तिगत दृष्टिकोण हो, व्यक्तिगत रचनात्मकता हो और हमने कुछ अलग देखने व दिखाने की कोशिश की हो। चाहे वह भू–दृश्य छायांकन ही क्यों ना हो। उसे कलात्मक छायांकन कह सकते हैं।''

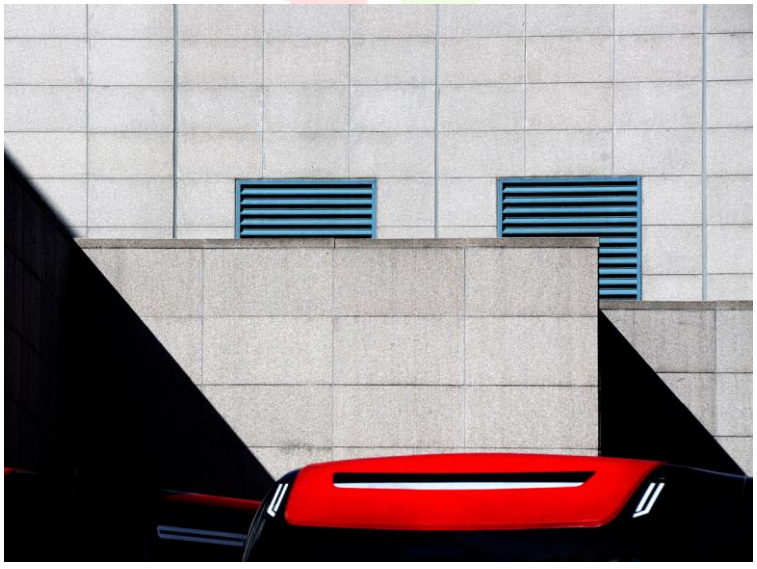

(छायाचित्र–4)

- **आजकल आप मोबाइल से छायांकन करते हैं, भविष्य में मोबाइल छायांकन को कैसे देखते हैं?**

हाँ यह सच है कि आजकल मोबाइल से भी छायांकन करना शुरू कर दिया है। मैंने मोबाइल छायांकन की बारीकियाँ समझी, बल्कि समझी ही नहीं उसको प्रयोगात्मक रूप में प्रयोग करने की कोशिश भी की है। मैं बहुत संतुष्ट हूँ, एक बार पुनः भू–दृश्य छायाचित्र को अपना विषय बनाना शुरू किया है। विशेषकर पहाड़ों (छायाचित्र–5) से मेरा पुराना लगाव एक बार फिर से सामने आया है, किंतु अब उन छायाचित्रों में रंग और संयोजन भी है। जिसके लिए मैंने माध्यम के रूप में मोबाइल को चुना, शायद! भविष्य मोबाइल छायांकन का ही है। वर्तमान में बहुत से ऐसे मोबाइल फोन बाजार में आ गए हैं, जिनकी छायाचित्र गुणवत्ता बहुत अच्छी है।

(छायाचित्र–5)

- **क्या भविष्य में अपनी छायांकन यात्रा जारी रखेंगे?**

मेरी बस यही इच्छा है कि मैं निरंतर काम करता रहूं और यह जो मेरा जीवन है या छायांकन से लगाव है, हमेशा जीवन प्रयत्न बना रहे। क्योंकि मेरे लिए यह जीने के लिए बहुत बड़ा सहारा है। मुझे नहीं लगता कि मैं छायांकन से अच्छा कोई और कार्य कर सकता हूँ। अतः जिस चीज को करने में मुझे प्रसन्नता मिलती है, वह छायांकन है। मैं जब तक जीवित रहूँ, उसको करने में सक्षम रहूँ। मेरी परमेश्वर से यही प्रार्थना है।

- **छायांकन के लिए आपको बहुत से राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पुरष्कार व सम्मान मिले हैं, इसको प्राप्त करने की चाहत आपके दिल में कब हुई? इस पर क्या कहना चाहेंगे?**

जब भी मैं प्रदर्शनियों को देखने जाता था तो छायाकारों के नाम के आगे कुछ अल्फाबेट्स देखता था, ARPS, AFIAP, EFIAP इत्यादि। मेरी समझ में नहीं आता था कि यह क्या है? जब अपने वरिष्ठ से इसके बारे में पूछा तब उन्होंने बताया कि यह अंतरराष्ट्रीय सम्मान होते हैं। इनको अर्न करना पड़ता है और इसकी बहुत लंबी प्रक्रिया होती है। तत्पश्चात मेरे दिल में एक इच्छा जागृत हुई कि कॉश मेरे पास भी ये सम्मान होते तो कितना अच्छा होता। इस सम्मान की चाहत मेरे दिल में उस समय हुई, जब मैंने दो अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियाँ लखनऊ में देखी। जिसको यू.पी. एमेच्योर फोटोग्राफी एसोसिएशन ने आयोजित किया था।

छायांकन के लिए मुझे देश विदेश से करीब 250 पुरष्कारों से नवाजा गया है। 'रंग और आकार' का मेरा जो प्रयोग था जनसाधारण ने भी इसे काफी सराहा। इस प्रयोग पर मुझे बहुत से पुरष्कार मिले। रंग और आकार छायाचित्रों के लिए ही एक अंतर्राष्ट्रीय संस्था ''फेडरेशन इंटरनेशनल डी एल'आर्ट फोटोग्राफिक'' (FIAP) के द्वारा MFIAP का सम्मान भी मिला। इस संदर्भ में मैं कहना चाहूँगा कि अभी तक सिर्फ 15 भारतीय छायाकारों को यह सम्मान प्राप्त हुआ है। इस प्रकार MFIAP का सम्मान मेरे लिए काफी उत्साह का कारण बना और 2011–12 में भारत सरकार द्वारा भी मेरे 10 छायाचित्रों (रंग और आकार) के लिए राष्ट्रीय पुरष्कार मिले। राज्य ललित कला अकादमी, लखनऊ द्वारा मुझे मेरे प्रयोगात्मक कार्य "रंग और आकार" पर पुरष्कार मिले।

निष्कर्ष

इस प्रकार देखा जाए तो अनिल रिसाल सिंह के छायचित्रों में ज्यामितीय आकार, रंग, कंक्रीट संरचना आदि का प्रयोग बहुतायत में देखने को मिलता है और इसी आधार पर साधारण वस्तुओं व दृश्यों को असाधारण बना देना ही उनकी प्रसिद्धि का बहुत बड़ा कारण है। अनिल की छायांकन यात्रा उसी समय शुरू हो गई थी, जब उनके पिता ने उन्हें एक 'एग्फा आइसोली' कैमरा भेंट में दिया। उसके बाद वह पढ़ाई के साथ–साथ छायांकन में भी निरंतर कार्य करते रहे और लखनऊ क्रिश्चियन कॉलेज में फोटोग्राफी क्लब को अपने सहपाठियों के साथ मिलकर पुनर्गठित किया। यूपी राज्य स्तरीय छायांकन प्रतियोगिता भी कराई, जिससे क्रिश्चियन कॉलेज के और देश के अन्य छायांकन से संबंधित विद्यार्थियों को उसका लाभ प्राप्त हुआ। वह यू.पी. एमेच्योर फोटोग्राफी एसोसिएशन के सदस्य बनें। वहाँ पर बहुत से वरिष्ठ और कनिष्ठ सदस्य थे, जिससे अनिल ने छायांकन से संबंधित बहुत कुछ सीखा। दुर्भाग्यवश यह संस्था बंद हो गई और 1979 ई. में लखनऊ कैमरा क्लब का गठन हुआ। अनिल भी इसके संस्थापक सदस्यों में से एक थे। वर्तमान में अनिल इस क्लब के अध्यक्ष हैं और जहाँ पर वर्षों से छायांकन से संबंधित कार्यक्रमों का आयोजन कराया जाता है। कलात्मक छायांकन के क्षेत्र में छायाकार अनिल ने बहुत ही अहम भूमिका अदा की है तथा संसार में देश के मान को बढ़ाया है। अनिल ने कैमरे के स्थान पर मोबाइल को भी अपने छायांकन का माध्यम बनाया है। शुरू में श्वेत–श्याम भू–दृश्यों का छायांकन एवं बाद में "रंगों और आकारों" का संयोजन करते हुए एक बार पुनः उनका झुकाव पहाड़ों के छायांकन के प्रति हो गया है किंतु इसमें रंग और संयोजन भी देखे जा सकते हैं।

(छायाचित्र–6)
छायाकार अनिल रिसाल सिंह

(छायाचित्र–6)
छायाकार अनिल रिसाल सिंह और शोधार्थी हरिकेश यादव

संदर्भ

1- सिंह, ए0 आर0 (01 अप्रेल, 2022), व्यक्तिगत साक्षात्कार, अलीगंज, लखनऊ।

2- *https://navbharattimes.indiatimes.com/photography-is-passion-and-obsession-for-anil-risal-singh/articleshow/22060993.cms*

3- *https://pankajsharmaphotography.blogspot.com/2009/06/brilliant-photo-artist-anil-risal-singh.html?m=1*

4- *http://www.ypsbengaluru.com/event/experimentation-with-form-and-color/*

5- *https://chhayankan.com/anil-risal-singh*

6- *https://www.fiap.net/en/portfolios/mfiap/anil-risal-singh*

7- *https://smartphotography.in/monochrome-masterpieces/2/*